लोमड़ी कथा

लोमड़ी कथा

माँ हमेशा हमें गर्म और सुरक्षित रखती थी. पिता रात में शिकार करने जाते थे और सुबह होते ही हमारे लिए खाना लेकर आते थे.

मैं उस समय को कभी न भूलूँगा जब मैंने पहली बार अपनी गुफा से बाहर देखा था. बाहर की हवा इतनी निर्मल थी कि मैं दंग रह गया था. उदय हो रहे सूर्य के लिए पक्षी गीत गा रहे थे. वसंत में निकले नए पत्तों को शीतल पवन हिला रही थी.

अचानक आँधी तेज़ हो गई और चीखती, चिल्लाती मेरी ओर आने लगी.

मैं लुढ़क कर, धरती के अंदर, अपनी गुफा में वापस आ गया और अपनी माँ और भाई-बहनों के साथ चिपक कर बैठ गया.

मैंने पहले भी तेज़ आँधी को चीखते-चिल्लाते सुना था पर घर के अंदर अपने को मैं हमेशा सुरक्षित महसूस करता था.

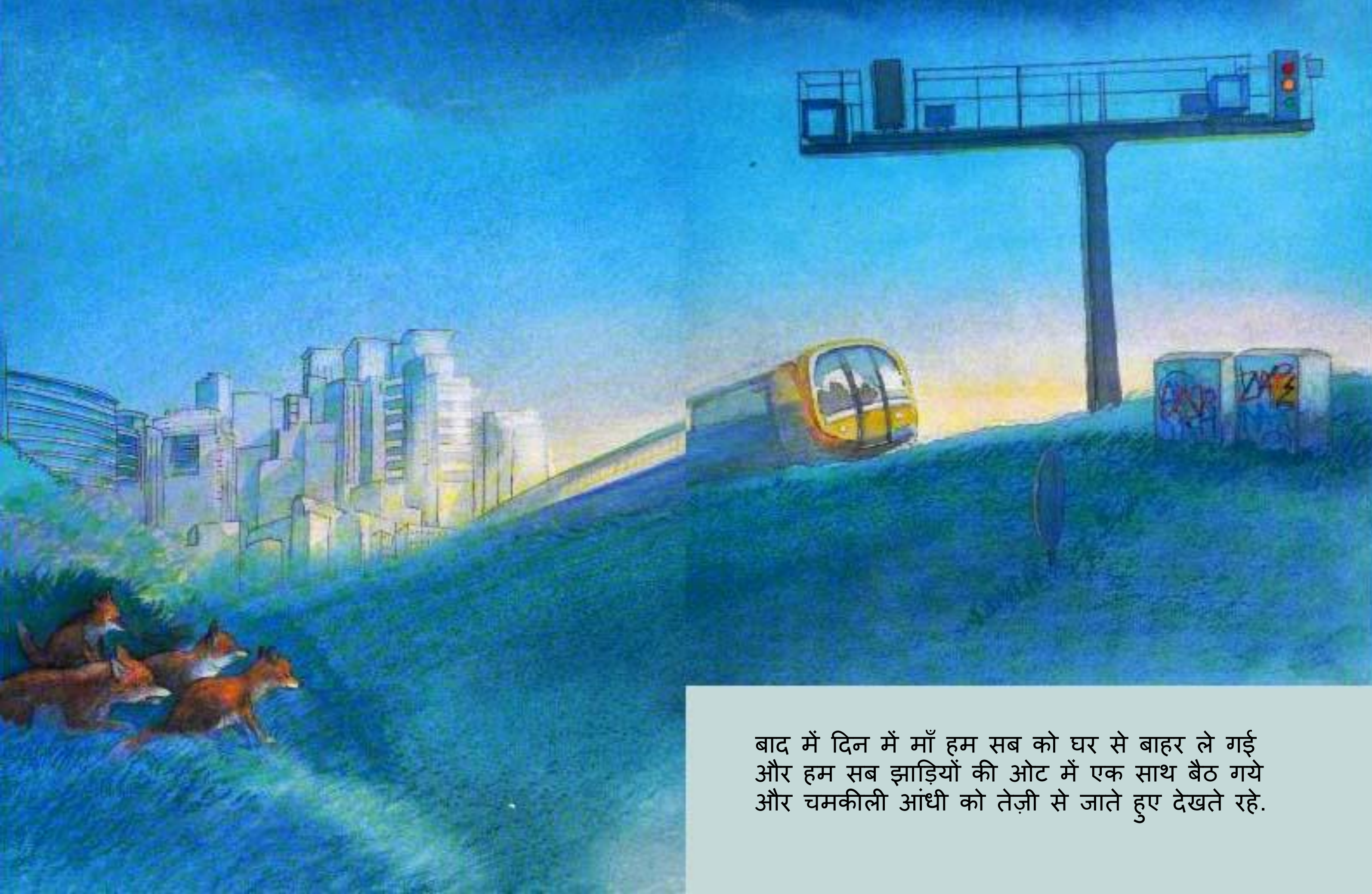

बाद में दिन में माँ हम सब को घर से बाहर ले गई
और हम सब झाड़ियों की ओट में एक साथ बैठ गये
और चमकीली आंधी को तेज़ी से जाते हुए देखते रहे.

जब वसंत के बाद ग्रीष्म ऋतु आई, माँ रात के समय हमें घर से बाहर ले गई. आँधियाँ शांत थी और चाँद के प्रकाश में झिलमिलाता संसार खामोश था.

माँ ने हमें बताया कि खाने की अच्छी चीजें कहाँ खोजी जा सकती थीं. कुछ चीजें हम उठा सकते थे और कुछ चीज़ों के लिए हमें चढ़ना पड़ता था और कुछ हमें लपक कर पकड़नी पड़ती थीं! लेकिन उसने हमें सावधान किया कि कभी भी आँधियों के रास्ते पर नहीं जाना.

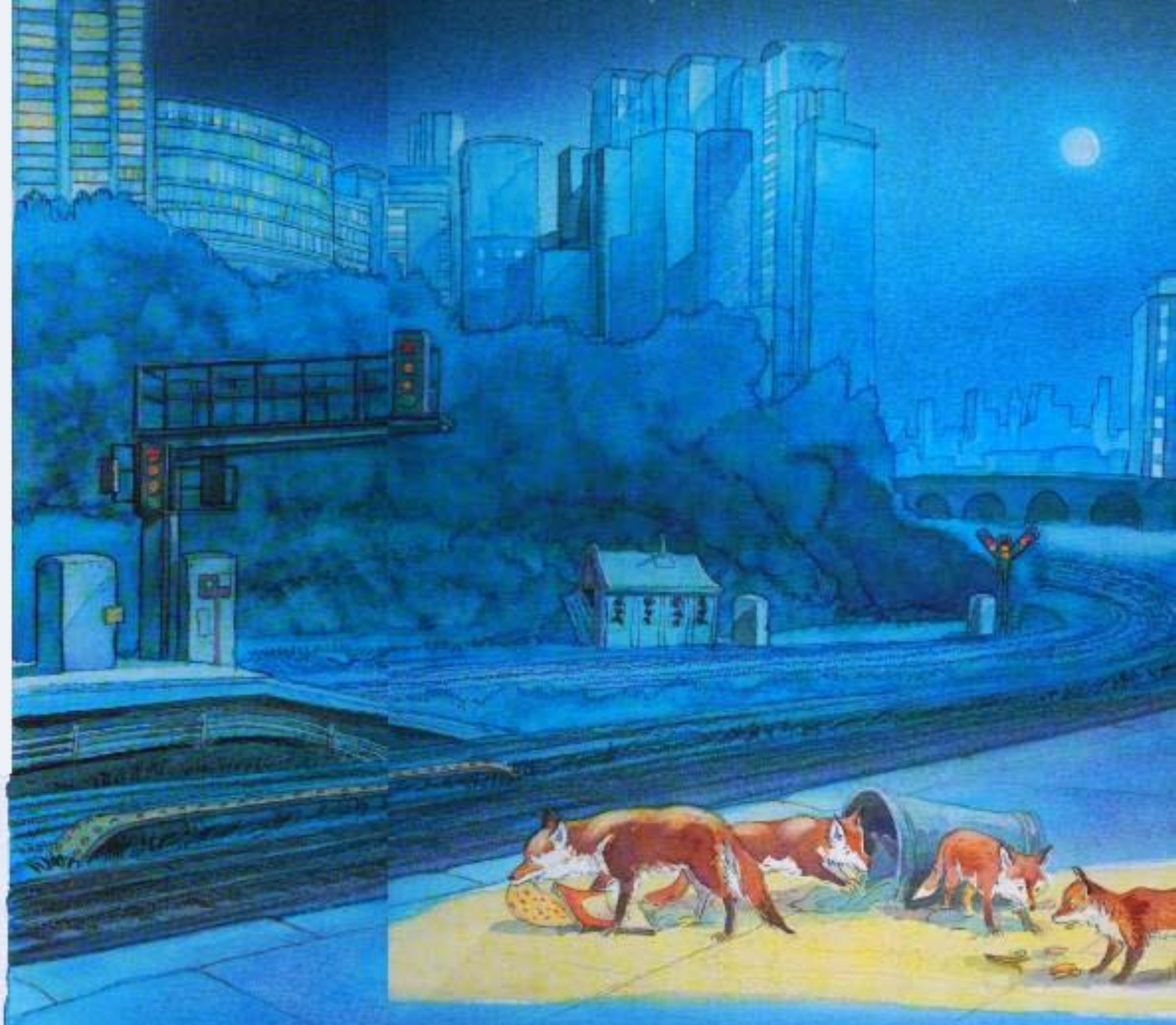

फिर, एक शाम जब पत्ते गिर रहे थे और धुंध छाई हुई थी, हम सब पिता के साथ बाहर गये. आँधियाँ तब भी धड़धड़ाती हुई चल रही थीं पर हमें डर न लग रहा था क्योंकि पिता हमारे साथ थे.

हम उस जगह आ गये जहाँ आँधियाँ रूकती है. वह जगह बहुत ही व्यस्त थी. हम सब प्रतीक्षा करते रहे और देखते रहे.

तभी पिता के कान खड़े हो गए. एक आदमी हमारी ओर आ रहा था. उसे कैसे पता चला कि हम वहाँ थे, मैं सोचने लगा.

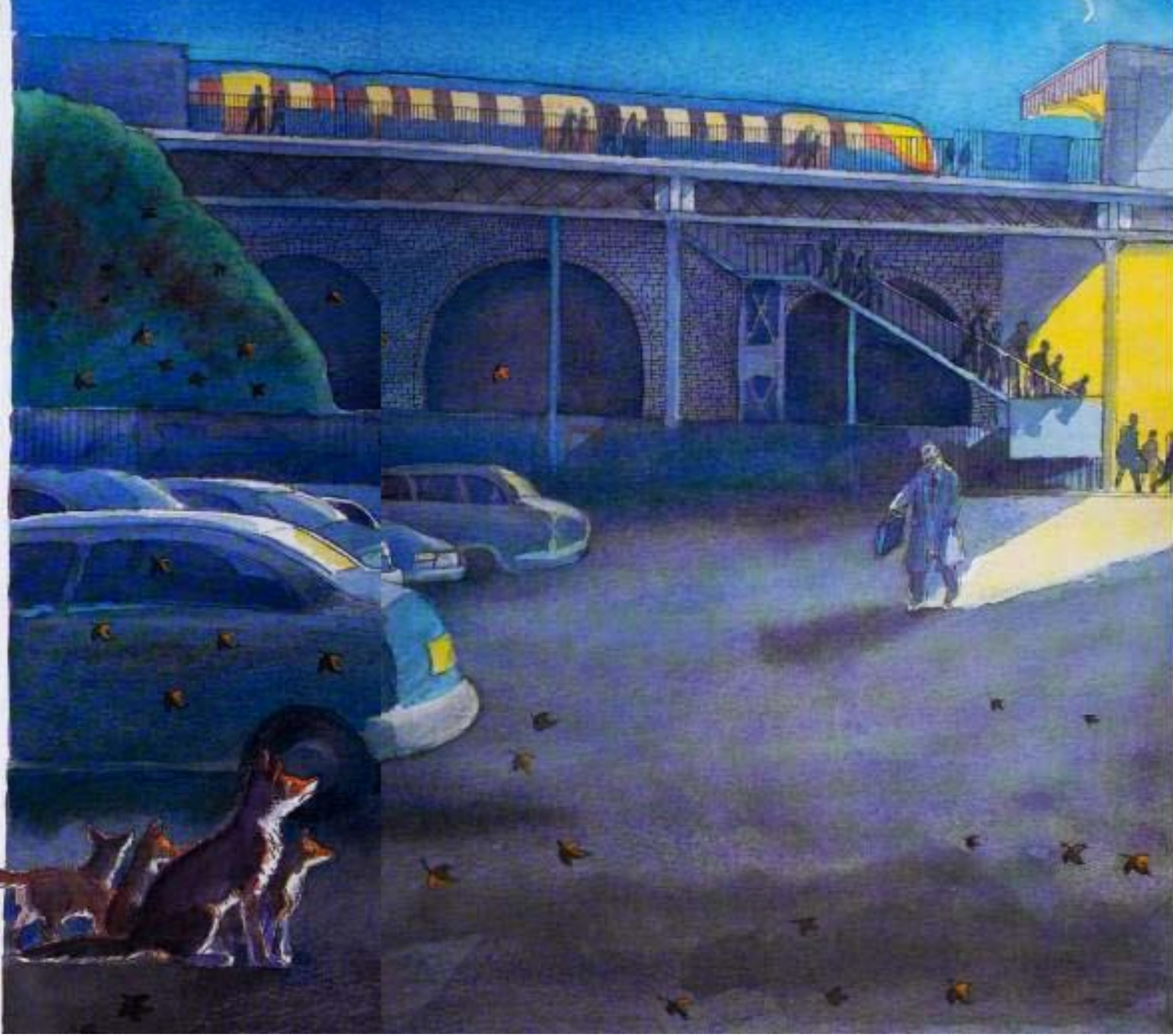

जब उसने पिता को देखा तो वह
मुस्कराया और जब उसने हमें देखा तो उसकी मुस्कान बड़ी हो गई. उसने अपने थैले से खाना निकाला; हमारी कुछ मनपसंद चीज़ें. यह वह खाना था जो पिता कई बार हमारे लिए घर लाये थे. अब मुझे समझ आया कि वह खाना कहाँ से आता था.

उस दिन के बाद पिता हर शाम हमें उस आदमी के पास ले जाते. हर बार वह कोई स्वादिष्ट चीज़ हमें खाने के लिए देता.

एक शाम जब वह आदमी आँधी से उतर कर नीचे आया, सारा संसार सफ़ेद हो गया था. हम उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे लेकिन मनुष्य-शावकों ने सफ़ेद चीज़ हम पर फेंकनी शुरू कर दी.

उन्हें रोकने के लिए वह आदमी दौड़ा लेकिन वह फिसल कर गिर गया. सारे मनुष्य-शावक उस पर हँसने लगे और उसके आसपास इकट्ठे हो गये. उसका थैला उन्होंने छीन लिया और उसके भीतर टटोलने लगे. फिर उन्होंने थैला ज़मीन पर फेंक दिए.

पिता तेज़ी से आगे दौड़े और हम उनके पीछे भागे. मुझे लगा पिता खाने की ओर जा रहे थे. लेकिन उन्होंने अपने दाँत दिखाए और वह गुर्राये. हम ने भी वैसे ही किया और मनुष्य-शावकों को दौड़ा कर भगा दिया.

वह आदमी अभी भी बर्फ से ढकी ज़मीन पर लेटा हुआ था. मैंने उसका हाथ पर अपनी जीभ फेरी. पिता ने जीभ से उसका चेहरा चाटा.

फिर एक और आंधी आई और लोग उसमें से बाहर आये. हम ने अँधेरे में छिप कर देखा, उस आदमी को उठा कर कुछ लोग चमकती रोशनियों की ओर ले गये.

अगली शाम हम उस आदमी की प्रतीक्षा करते रहे. वह नहीं आया लेकिन मैंने एक मनुष्य-शावक को अँधेरे में खड़े देखा. उसके अगली शाम भी वह आदमी दिखाई न दिया, लेकिन मनुष्य-शावक अँधेरे से निकल कर हमारी ओर आया.

हमनें गुर्राते हुए अपने दाँत निकाल कर उसे डराया. वह रुक गया. फिर उसने एक थैला जमीन पर रख दिया और पीछे हट गया. पिता ने झपट कर वह थैला उठा लिया और हमारे पास ले आए. वह खाने से भरा हुआ था. उसके बाद वह मनुष्य-शावक हर शाम आकर एक थैला हमारे लिए छोड़ जाता. हम कभी भी उसके निकट नहीं गये क्योंकि हम ने देखा था कि वह जंगली था.

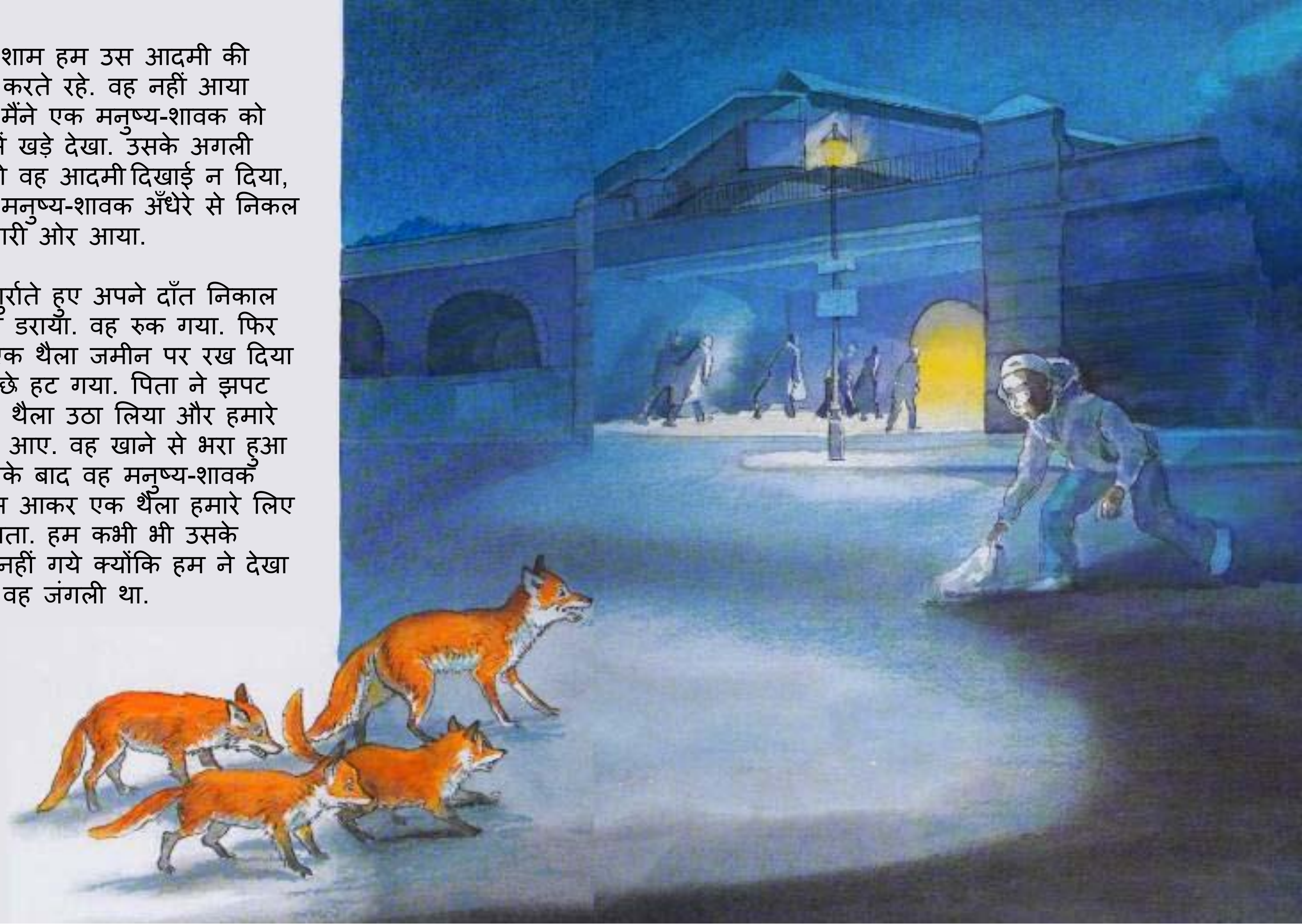

फिर एक शाम वह आदमी लौट आया. उसने अपना हाथ हिलाया और हम दौड़ कर उससे मिलने आये. वह हमारी मनपसन्द चीजें लाया था.

मैंने अँधेरे में मनुष्य-शावक को देखा और धीरे-धीरे उसके पास आया. उसने एक थैला जमीन पर रखा दिए और पीछे हट गया.

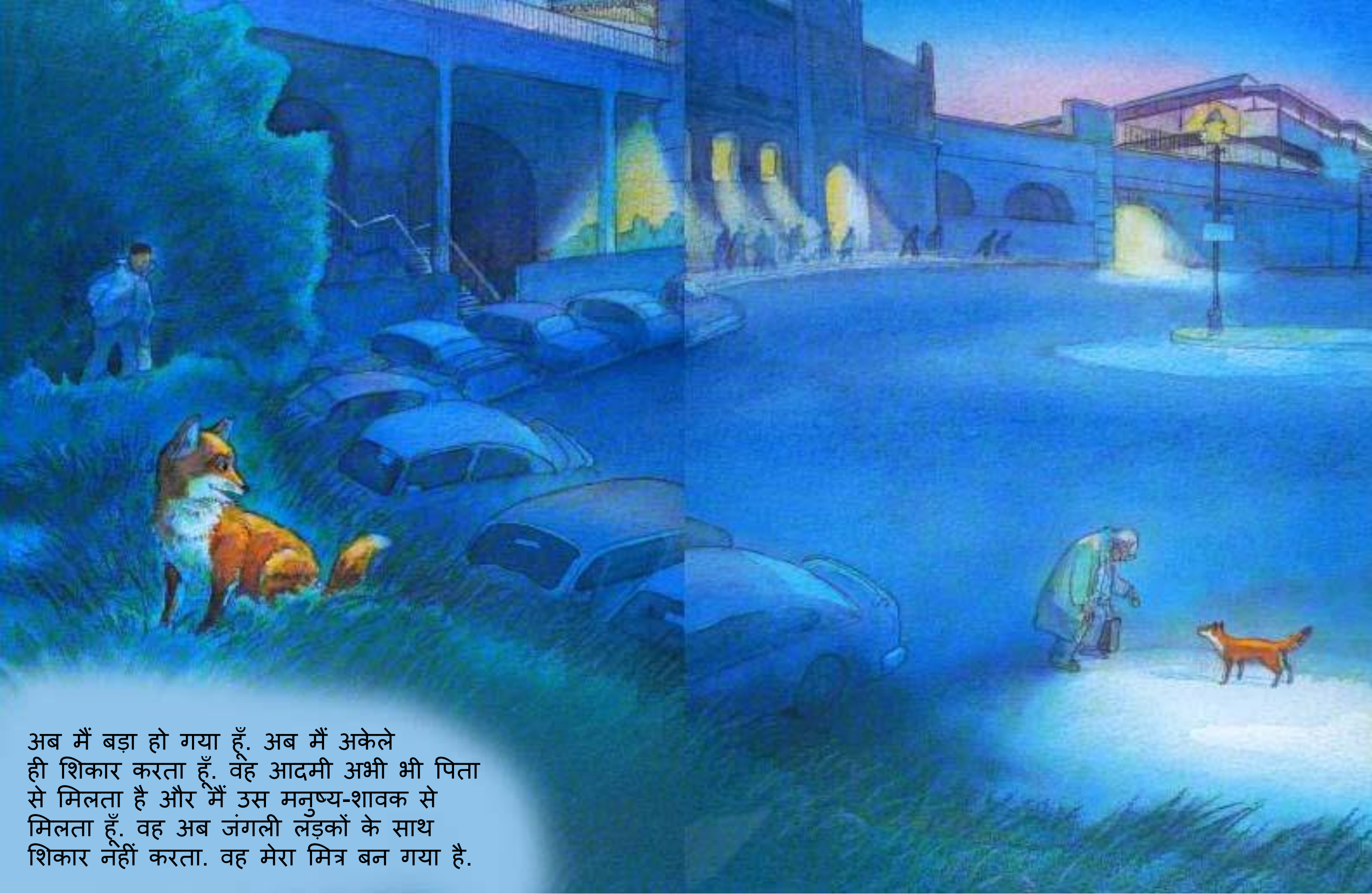

अब मैं बड़ा हो गया हूँ. अब मैं अकेले
ही शिकार करता हूँ. वह आदमी अभी भी पिता
से मिलता है और मैं उस मनुष्य-शावक से
मिलता हूँ. वह अब जंगली लड़कों के साथ
शिकार नहीं करता. वह मेरा मित्र बन गया है.

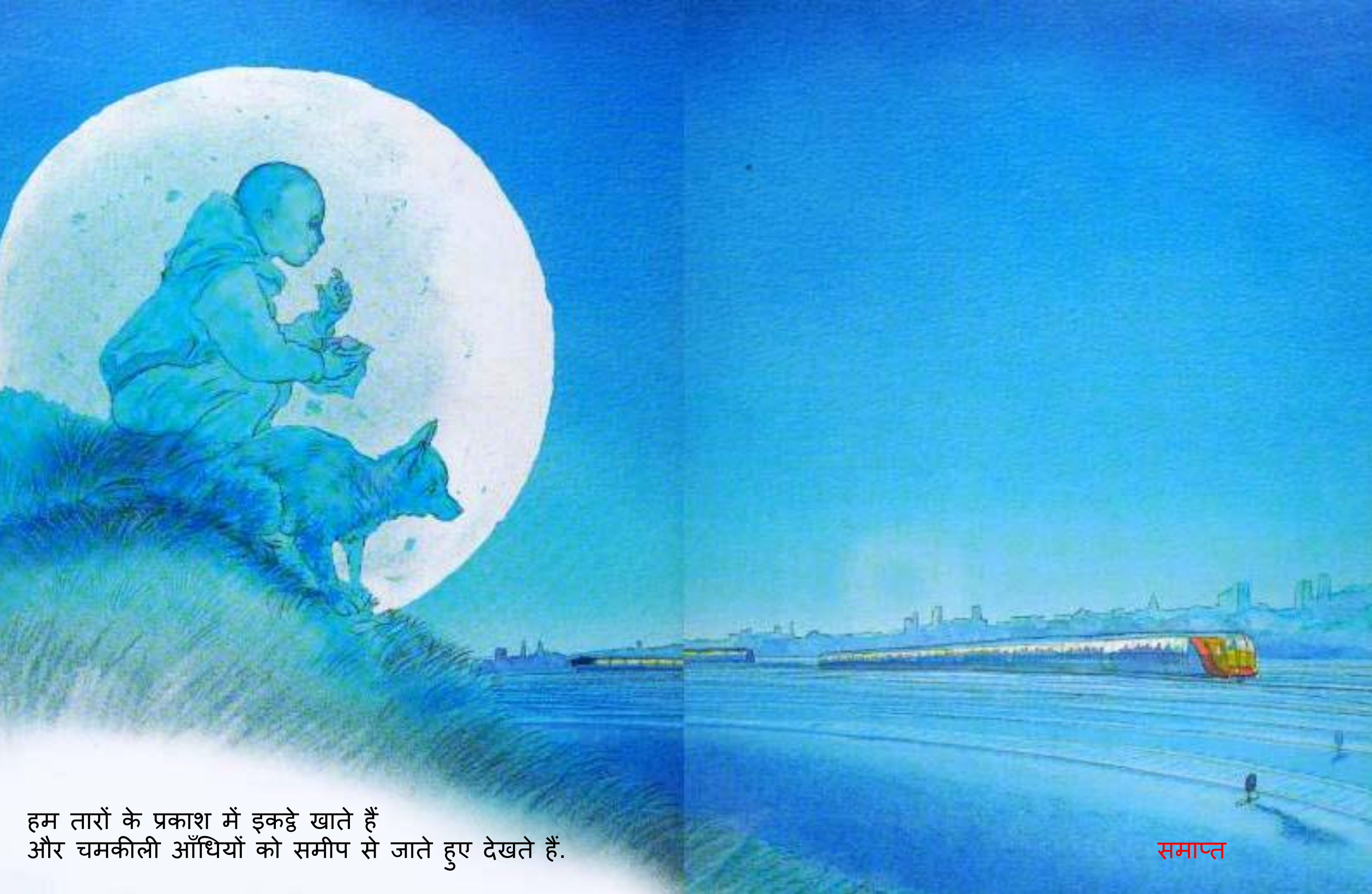

हम तारों के प्रकाश में इकट्ठे खाते हैं
और चमकीली आँधियों को समीप से जाते हुए देखते हैं.

समाप्त